भोजन और खेती (जारी)

__बाएं :__ सात्विक जिन बीजों को बचाने की कोशिश कर रहा है उनमें से कुछ पर लगे गुजराती लेबल।

__दाएं :__ गुजरात स्थित कच्छ में मिलने वाली 'काला' कपास एक जैविक प्रजाति है। यह प्रजाति वर्षा आधारित है और इसको उगाने के लिए खेत में कोई रसायनिक खाद नहीं डालनी पड़ती। इस कपास को खमीर के माध्यम से बेचा जा रहा है।

कृषि-पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक संदर्भ अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग होते हैं। कच्छ के किसानों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कपास और अरंडी जैसी नकदी फसलों को प्राथमिकता दी है। यहां सक्रिय सात्विक संगठन ने एक द्विआयामी पद्धति अपनाई है। भुज में स्थित सात्विक एक तरफ तो खाद्य फसलों के लिए परंपरागत सूखारोधी बीज प्रजातियों की हिमायत करता है और दूसरी तरफ उसने नकदी फसलों के लिए थर्ड पार्टी जैविक प्रमाणन भी हासिल किया है। इससे किसानों को बाजार में अपना माल बेचने और खेती को औद्योगिक रसायनों से बचाने दिलाने में मदद मिली है। सूचनाओं के प्रसार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिए सात्विक ने 'बीज जनक' (सीड ब्रीडर) किसानों का एक समूह तैयार करने का प्रयास किया है। इस समूह में ऐसे किसान हैं जो रह-रह कर बुवाई और बीजों की अदला-बदली के जरिए बीजों की प्रजातियों को बचाए रखने का प्रयास करते हैं।

उत्तराखंड में सक्रिय माटी (देखें चित्र ६) और बीज बचाओ आंदोलन भी अनौपचारिक आदान-प्रदान और चक्रीय बुवाई के जरिए बीज विविधता को बचाए रखने के उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

'बैंक में बीजों का क्या मतलब, वे तो हाथों से गुजरने चाहिए और खेतों में उगने चाहिए।'

- शैलेष व्यास, सात्विक

भीमाशंकर, महाराष्ट्र में जंगल से प्राप्त खाद्य पदार्थों का उत्सव। जंगलों, आर्द्र भूमियों और घास के मैदानों से मिलने वाला जंगली आहार पोषण का बहुत महत्वपूर्ण स्रोत है।

मुन्स्यारी, उत्तराखंड में राजमा के बीजों की एक किस्म। यहां पर माटी संगठन सक्रिय है।

जरधर गांव, उत्तराखंड में मक्का के बीजों की विविधता। यहां बीज बचाओ आंदोलन सक्रिय है।